मेरी प्रिय कहानी

जीवन का नज़रिया

ऐसी कौन-सी परिस्थिति है, जिसमें आदमी शांत न हो सके; ऐसी कौन सी परिस्थिति है, जिसमें आदमी प्रेमपूर्ण न हो सके? ऐसी कौन-सी परिस्थिति है, जिसमें आदमी थोड़ी देर के लिए मौन और शांति में प्रविष्ट न हो सके?

हर स्थिति में, हर परिस्थिति में—वह होना चाहे तो बिलकुल हो सकता है।

यूनान में एक वजीर को उसके सम्राट ने फांसी की सजा दे दी थी। सुबह तक सब ठीक था। दोपहर वजीर के घर सिपाही आये और उन्होंने घर को चारों तरफ से घेर लिया और वजीर को भीतर जाकर खबर दी, कि आप कैद कर लिए गये हैं और सम्राट की आज्ञा है कि आज संध्या आपको फांसी दे दी जायेगी, छह बजे!

वजीर के घर उसके मित्र आये हुए थे। एक बड़े भोजन का आयोजन था। वजीर का जन्म-दिन था वह। एक बड़े संगीतज्ञ को बुलाया गया था। वह अभी-अभी अपनी वीणा लेकर हाजिर हुआ था। अब उसका संगीत शुरू होने को था। संगीतज्ञ के हाथ ढीले पड़ गये। वीणा उसने एक ओर टिका दी। मित्र उदास हो गये। पत्नी रोने लगी। लेकिन उस वजीर ने कहा, 'छह बजने में अभी बहुत देर है, तब तक गीत पूरा हो जायेगा! तब तक भोज भी पूरा हो जायेगा! राजा की बड़ी कृपा है कि छह बजे तक कम-से-कम उसने फांसी नहीं दी।

लेकिन वीणा बंद क्यों हो गयी? भोजन बंद क्यों हो गया? मित्र उदास क्यों हो गये हैं? छह बजने में अभी बहुत देर है। छह बजे तक कुछ भी बंद करने की कोई जरूरत नहीं।

लेकिन मित्र कहने लगे, अब हम भोजन कैसे करें? संगीतज्ञ कहने लगा, मैं वीणा कैसे बजाऊं? परिस्थिति बिलकुल अनुकूल नहीं रही।

वह आदमी हंसने लगा, जिसको फांसी होने को थी! उसने कहा, 'इससे अनुकूल परिस्थिति और क्या होगी। छह बजे मैं मर जाऊंगा। क्या यह उचित न होगा कि उसके पहले मैं संगीत सुनूं? क्या यह उचित न होगा कि उसके पहले मैं अपने मित्रों से हंस लूं, बोल लूं, मिल लूं। क्या यह उचित न होगा कि मेरा घर एक उत्सव का स्थान बन जाये; क्योंकि सांझ छह बजे मुझे हमेशा को विदा हो जाना है।'

घर के लोग कहने लगे, परिस्थिति अनुकूल न रही कि कोई वीणा बजाये। घर के लोग कहने लगे परिस्थिति अनुकूल न रही कि अब कोई भोज हो।

लेकिन वह आदमी कहने लगा कि इससे अनुकूल परिस्थिति और क्या होगी। जब छह बजे मुझे हमेशा के लिए विदा हो जाना है तो क्या यह उचित न होगा कि विदा होते क्षणों में मैं संगीत सुनूं? क्या यह उचित न होगा कि मित्र उत्सव करें? क्या यह उचित न होगा कि मेरा घर एक उत्सव बन जाये, कि जाते क्षण मेरी स्मृति में हमेशा वे थोड़े से पल टिके हुए रह जायें, जो मैंने अंतिम क्षण में, विदाई के क्षण में अनुभव किये थे।

और उस घर में वीणा बजती रही और उस घर में भोजन चलता रहा। यद्यपि लोग उदास थे, संगीतज्ञ उदास था, परेशान था। लेकिन वह वजीर खुश था, वह प्रसन्न था!

राजा को खबर मिली। राजा देखने आया कि वह वजीर पागल तो नहीं है! और जब वह पहुंचा तो घर वीणा बजती थी और मेहमान इकट्ठे थे। और राजा जब भीतर गया तो वजीर खुद भी आनंदमग्न बैठा था! तो उस राजा ने पूछा, तुम पागल हो गये हो? खबर नहीं मिली कि छह बजे सांझ मौत तुम्हारी आ रही है।

उसने कहा, 'खबर मिल गयी, इसलिए आनंद के उत्सव को हमने तीव्र कर दिया है, उसे शिथिल करने का तो सवाल न था, क्योंकि छह बजे तक हमने आनंद के उत्सव को तीव्र कर दिया है; क्योंकि अंतिम विदा के क्षण स्मरण में रह जायें।'

राजा ने कहा, 'ऐसे आदमी को फांसी देना व्यर्थ है। जो आदमी जीना जानता है, उसे मरने की सजा नहीं दी जा सकती। उसने कहा, सजा मैं वापस ले लेता हूं। ऐसे प्यारे आदमी को अपने हाथों से मारूं, यह ठीक नहीं।'

जीवन में क्या अवसर है, क्या परिस्थिति है, यह इस बात पर निर्भर नहीं होता है कि क्या है। यह इस बात पर निर्भर होता है कि हम उस परिस्थिति को किस भांति लेते हैं, किस 'एटीट्यूट' में, किस दृष्टि से।

— ओशो
नेति-नेति